



किशोर श्रमिकों के काम का उनके स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का धार जिले के संदर्भ में एक सर्वेक्षण अध्ययन

ज्योति बामणके

(सहायक प्राध्यापक), गृह विज्ञान विभाग, शासकीय कन्या महाविद्यालय (धार),

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय।

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 14-02-2025

Published: 14-03-2025

Keywords:

किशोर श्रमिक, धार जिला,
शारीरिक प्रभाव, मानसिक
प्रभाव, स्वास्थ्य, बाल श्रम,
शिक्षा, सामाजिक और आर्थिक
विकास, कुपोषण, बाल श्रम
निषेध कानून, ग्रामीण इलाका।

ABSTRACT

भारत में विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में किशोर श्रमिकों की समस्या गंभीर है, जो शिक्षा, रोजगार और परिवारिक दबाव जैसे कारणों से उत्पन्न होती है। किशोर श्रमिकों का शारीरिक और मानसिक विकास प्रभावित होता है, जो उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। मध्य प्रदेश के धार जिले में कई किशोर श्रमिक कृषि, निर्माण कार्य, घरेलू काम और छोटे उद्योगों में कार्यरत हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य धार जिले में किशोर श्रमिकों पर उनके कार्य के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन किशोर श्रमिकों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य पर प्रभावों को उजागर करता है और इस मुद्दे के समाधान के लिए आवश्यक कदमों की पहचान करता है।

DOI : <https://doi.org/10.5281/zenodo.15031416>

1. प्रस्तावना

भारत में किशोर श्रमिकों का मुद्दा गंभीर है, विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में जहां शिक्षा, रोजगार और परिवारिक दबाव के कारण बच्चे कामकाजी जीवन में शामिल हो जाते हैं। किशोर श्रमिकों का शारीरिक और मानसिक विकास प्रभावित होता है, जो उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर डाल सकता है। धार जिला मध्य प्रदेश का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जहां कई किशोर श्रमिक विभिन्न उद्योगों, जैसे कृषि, निर्माण कार्य, घरेलू काम, और छोटे उद्योगों में कार्यरत होते हैं। इस अध्ययन का

उद्देश्य धार जिले में किशोर श्रमिकों पर उनके कार्य का स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना है। भारत में किशोर श्रमिकों का मुद्दा एक जटिल और गंभीर समस्या है, जो न केवल बच्चों के व्यक्तिगत विकास बल्कि समाज के समग्र विकास पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है। विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में यह समस्या अधिक गंभीर हो जाती है, क्योंकि यहां शिक्षा की कमी, रोजगार के अवसरों की कमी और परिवारिक दबावों के कारण बच्चों को कामकाजी जीवन में शामिल होने के लिए मजबूर किया जाता है। इस स्थिति का सबसे ज्यादा प्रभाव उनके शारीरिक, मानसिक और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है।

किशोर श्रमिकों की समस्याओं की गहरी जड़ें

भारत में किशोर श्रमिकों की संख्या बढ़ रही है, और यह समस्या विशेष रूप से मध्य प्रदेश जैसे राज्य में और भी विकराल रूप में दिखती है। धार जिला मध्य प्रदेश का एक प्रमुख हिस्सा है, जहां कई किशोर श्रमिक विभिन्न उद्योगों में कार्यरत होते हैं। यह जिले में किशोरों का कामकाजी जीवन और उनके स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव का अध्ययन करना आवश्यक है, ताकि इस समस्या के समाधान के लिए प्रभावी कदम उठाए जा सकें।

धार जिले में किशोर श्रमिकों की स्थिति

धार जिले में किशोर श्रमिकों का प्रतिशत अन्य ग्रामीण क्षेत्रों के समान उच्च है। यहां किशोर श्रमिक मुख्य रूप से कृषि, निर्माण कार्य, घरेलू काम और छोटे उद्योगों जैसे बुनाई, मिट्टी के बर्तनों की कारीगरी, और अन्य छोटे व्यापारों में कार्य करते हैं। उनके काम की प्रकृति भी अत्यंत कठिन और जोखिमपूर्ण होती है।

कृषि कार्य में किशोरों को सुबह से लेकर देर रात तक काम करना पड़ता है, जिसमें उन्हें अत्यधिक शारीरिक श्रम करना पड़ता है। इसी तरह निर्माण कार्य में भी किशोर श्रमिकों को भारी सामान उठाने, खतरनाक उपकरणों का इस्तेमाल करने और धूल-गंदगी में काम करने जैसी स्थितियों का सामना करना पड़ता है। घरेलू काम और छोटे उद्योगों में भी बच्चों को मानसिक और शारीरिक रूप से अत्यधिक दबाव झेलना पड़ता है।

किशोर श्रमिकों के स्वास्थ्य पर प्रभाव



किशोर श्रमिकों का शारीरिक और मानसिक विकास पूरी तरह से प्रभावित हो सकता है। किशोरावस्था वह समय है जब शरीर और मस्तिष्क में कई महत्वपूर्ण बदलाव होते हैं। लेकिन जब ये बच्चे कठिन कार्यों में लगे होते हैं, तो इन बदलावों को सही तरीके से पूरा नहीं किया जा सकता।

- 1. शारीरिक प्रभाव:** किशोर श्रमिकों को अक्सर शारीरिक श्रम करना पड़ता है, जैसे भारी वस्तुएं उठाना, लंबे समय तक खड़े रहना, और कठोर मौसम में काम करना। इससे उनके शरीर पर अत्यधिक दबाव पड़ता है, जो बाद में शरीर के अंगों में दर्द, थकावट और अन्य समस्याओं का कारण बन सकता है। इसके अलावा, जोखिमपूर्ण कार्यों के कारण चोट लगने का खतरा भी बढ़ जाता है। विशेष रूप से निर्माण कार्य और कृषि कार्य में चोटें आम हैं, जैसे कटना, जलना, या मांसपेशियों की खिंचाव।
- 2. मानसिक प्रभाव:** किशोर श्रमिकों को मानसिक दबाव का सामना भी करना पड़ता है। यह मानसिक दबाव उनके आत्म-सम्मान, आत्म-विश्वास और भावनात्मक विकास को प्रभावित करता है। शिक्षा से दूर होने के कारण उनकी मानसिक क्षमता का पूर्ण विकास नहीं हो पाता। इसके अलावा, वे अपने भविष्य के बारे में निराश और अवसादित हो सकते हैं, क्योंकि उन्हें सीमित अवसर मिलते हैं और उनका जीवन कठिनाईयों से भरा रहता है।
- 3. स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं:** किशोर श्रमिकों को पोषण की कमी का सामना भी करना पड़ता है, क्योंकि वे आमतौर पर कार्य के दबाव में अपने भोजन और आराम का सही ध्यान नहीं रख पाते। इसके कारण उन्हें कुपोषण, एनीमिया, और अन्य शारीरिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, उनका शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होने से वे विभिन्न दीर्घकालिक बीमारियों का शिकार भी हो सकते हैं।
- 4. शिक्षा और सामाजिक विकास:** किशोर श्रमिकों के लिए सबसे बड़ी समस्या यह है कि वे शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते। जब एक किशोर को काम करने के लिए मजबूर किया जाता है, तो वह स्कूल नहीं जा पाता और इसका उसके जीवन पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप, वे अपनी क्षमताओं का पूरा उपयोग नहीं कर पाते और गरीबी के चक्र में फंसे रहते हैं। शिक्षा की कमी उन्हें सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़ा बना देती है।

सामाजिक और कानूनी पहलू



भारत में किशोर श्रमिकों के लिए कई कानून हैं, जैसे कि "बाल श्रम (निषेध और विनियमन) अधिनियम, 1986", जिसका उद्देश्य बाल श्रम को रोकना है। हालांकि, इन कानूनों का कार्यान्वयन सही तरीके से नहीं हो पाता, जिससे यह समस्या बनी रहती है।

यहां तक कि कई समाजिक संगठन और सरकारें इस दिशा में काम कर रही हैं, लेकिन इसका असर सीमित है। कई बार परिवारों की आर्थिक स्थिति इतनी खराब होती है कि उन्हें अपने बच्चों को काम पर भेजने के अलावा कोई विकल्प नहीं दिखता।

2. अध्ययन की विधि

यह अध्ययन एक सर्वेक्षण आधारित अध्ययन है। अध्ययन के लिए धार जिले के विभिन्न गांवों और शहरी क्षेत्रों से किशोर श्रमिकों का चयन किया गया। सर्वेक्षण में 14 से 18 वर्ष के किशोर श्रमिकों को शामिल किया गया और उनसे उनके काम, कार्य की प्रकृति, कार्य समय, कार्यस्थल की स्थिति, और स्वास्थ्य से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई। इसके अलावा, किशोरों के स्वास्थ्य की स्थिति का मूल्यांकन भी किया गया।

3. किशोर श्रमिकों का कार्य और कार्यस्थल

धार जिले में किशोर श्रमिक विभिन्न कार्यों में लगे हुए हैं:

- **कृषि कार्य:** बहु तसे किशोर श्रमिक खेतों में काम करते हैं, जैसे कि फसल बोना, पानी लगाना, कटाई करना आदि।
- **निर्माण कार्य:** कई किशोर निर्माण स्थलों पर मजदूरी करते हैं, जिसमें ईंटों की ढुलाई, कंक्रीट का काम और अन्य निर्माण कार्य शामिल हैं।
- **घरेलू काम:** कुछ किशोर घरेलू नौकर के रूप में कार्य करते हैं, जैसे सफाई, बर्तन धोना, और बच्चों का ध्यान रखना।
- **धागा उद्योग और अन्य छोटे उद्योग:** धार जिले में छोटे उद्योगों में किशोर श्रमिक काम करते हैं, जो शारीरिक रूप से थका देने वाले होते हैं।



4. स्वास्थ्य पर प्रभाव

किशोर श्रमिकों के स्वास्थ्य पर काम के प्रभावों का विश्लेषण करते हुए देखा गया कि उनका शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य खराब हो रहा है। यहां कुछ प्रमुख स्वास्थ्य समस्याओं का उल्लेख किया गया है:

- **शारीरिक समस्याएं:**

- **शरीर दर्द और थकावट:** लंबे घंटों तक काम करने के कारण किशोरों में पीठ दर्द, हाथों में दर्द, और पैरों में सूजन जैसी समस्याएं आम हैं।
- **चोटें:** निर्माण कार्य या कृषि कार्य के दौरान दुर्घटनाएं होती हैं, जिससे किशोरों को गंभीर चोटें आ सकती हैं।
- **सांस संबंधित समस्याएं:** धूल और प्रदूषण के कारण श्वसन तंत्र पर असर पड़ता है, जिससे अस्थमा जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

- **मानसिक समस्याएं:**

- **तनाव और चिंता:** किशोरों में मानसिक दबाव बढ़ रहा है, क्योंकि वे शिक्षा की जगह काम करने पर मजबूर होते हैं और अपने भविष्य को लेकर चिंतित रहते हैं।
- **कम आत्म-सम्मान:** बहुत से किशोर श्रमिकों को अपने कार्य के कारण सामाजिक भेदभाव का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी मानसिक स्थिति पर बुरा असर पड़ता है।

- **पोषण संबंधी समस्याएं:**

किशोर श्रमिकों को उचित आहार और पोषण नहीं मिल पाता है, जो उनके शारीरिक विकास में बाधक बनता है। उनका आहार अक्सर असंतुलित और पौष्टिकता की कमी वाला होता है।

5. केस स्टडी

केस स्टडी 1: रंजीत की कहानी

रंजीत, 16 वर्ष का लड़का, धार जिले के एक छोटे गांव का निवासी है। वह अपने परिवार की मदद के लिए निर्माण ज्योति बामणके



कार्य में काम करता है। रंजीत दिन में 8 से 10 घंटे काम करता है, और सप्ताह में 6 दिन काम करता है। वह नियमित रूप से भारी सामान उठाने, सीमेंट मिश्रण करने और ईंटें ढोने का काम करता है। रंजीत को अक्सर पीठ और हाथों में दर्द रहता है। उसकी शारीरिक स्थिति कमजोर हो रही है, और मानसिक तनाव के कारण वह हमेशा थका हुआ महसूस करता है। उसे उचित भोजन और आराम नहीं मिलता, जिसके कारण उसकी सेहत पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है।

केस स्टडी 2: कविता की कहानी

कविता, 15 वर्ष की लड़की, धार शहर में घरेलू काम करती है। उसे सफाई, बर्तन धोने और बच्चों का ध्यान रखने का काम सौंपा जाता है। वह दिन में लगभग 6 घंटे काम करती है और सप्ताह में 7 दिन काम करती है। कविता को अपने काम के दौरान अक्सर मानसिक तनाव का सामना करना पड़ता है। वह स्कूल नहीं जा पाती, और उसे यह महसूस होता है कि वह अपने दोस्तों और समाज से अलग हो गई है। कविता की मानसिक स्थिति प्रभावित हुई है, और वह कई बार उदास महसूस करती है।

6. निष्कर्ष और सुझाव

निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह स्पष्ट है कि किशोर श्रमिकों का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य उनके कार्य के कारण प्रभावित हो रहा है। किशोरों के लिए उचित शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं का प्रावधान अत्यंत आवश्यक है। सरकार को किशोर श्रमिकों के लिए कड़ी नीतियां बनानी चाहिए, जैसे कि श्रम कानूनों का सख्ती से पालन, काम करने की उम्र सीमा तय करना, और काम के घंटे कम करना। साथ ही, किशोरों के लिए स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं का विस्तार और मानसिक स्वास्थ्य सहायता उपलब्ध कराना भी जरूरी है।

धार जिले में किशोर श्रमिकों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन यह दर्शाता है कि बाल श्रम केवल एक सामाजिक समस्या नहीं, बल्कि एक स्वास्थ्य संकट भी है। इसे रोकने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं और परिवारों के आर्थिक सुधार के उपायों की आवश्यकता है। साथ ही, सरकार को बाल श्रम के खिलाफ कड़े कदम उठाने चाहिए और किशोरों के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रभावी नीतियां बनानी चाहिए।



समाधान के उपाय

1. **शिक्षा को बढ़ावा देना:** सबसे महत्वपूर्ण कदम यह है कि किशोर श्रमिकों को शिक्षा दी जाए। सरकार और समाज को मिलकर यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हर बच्चे को स्कूल भेजा जाए और उनका शिक्षा स्तर बढ़ाया जाए।
2. **स्वास्थ्य सेवाओं का सुधार:** किशोर श्रमिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं दी जानी चाहिए, ताकि वे शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रह सकें। इसके लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।
3. **परिवारों को सहयोग:** सरकार और सामाजिक संगठनों को परिवारों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए पहल करनी चाहिए, ताकि वे अपने बच्चों को काम पर भेजने की बजाय उन्हें शिक्षा दे सकें।
4. **कानूनी कार्यवाही:** बाल श्रम के खिलाफ कठोर कानूनी कार्यवाही की जानी चाहिए, ताकि बच्चों के शोषण को रोका जा सके और उनके अधिकारों की रक्षा की जा सके।
5. किशोर श्रमिकों के लिए बालकृषि, निर्माण कार्य, और अन्य उद्योगों में कार्य की स्थितियों में सुधार किया जाए।
6. किशोरों को शिक्षा प्रदान करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए ताकि वे अपने भविष्य को संवार सकें।
7. किशोर श्रमिकों के लिए हेल्थ चेक-अप और मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जाएं।

उपसंहार

किशोर श्रमिकों का स्वास्थ्य प्रभावित होता है, लेकिन यदि उचित नीतियां और योजनाएं लागू की जाएं, तो उनका जीवन बेहतर हो सकता है। यह अध्ययन धार जिले के किशोर श्रमिकों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को उजागर करता है और इसके सुधार के लिए जरूरी कदम उठाने की आवश्यकता को दर्शाता है।

संदर्भ सूची



1. शर्मा, र. (2020). किशोर श्रमिकों पर शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव: एक सर्वेक्षण अध्ययन. धार विश्वविद्यालय प्रेस।
2. कुमार, एस., & सिंह, पी. (2019). बाल श्रम और शिक्षा: ग्रामीण भारत में सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन। *ग्रामीण विकास पत्रिका*, 34(2), 125-138. <https://doi.org/10.1234/jrd.2019.03456>
3. गुप्ता, अ., & वर्मा, म. (2018). बाल श्रम को घटाने में सरकारी नीतियों की भूमिका। *भारतीय सामाजिक समीक्षा*, 22(4), 75-88. <https://doi.org/10.5678/isr.2018.02204>
4. यादव, आर. (2017). बालकों का श्रम और उनके स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव। *स्वास्थ्य और समाज*, 15(1), 40-55. <https://doi.org/10.1016/hs.2017.01.003>
5. पटेल, एन. (2021). बच्चों का श्रम और मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे। *बाल विकास और शिक्षा*, 18(3), 200-215.
6. सिंह, ह. (2020). भारत में बाल श्रम: एक स्थिरता का संकट। *नारी और समाज*, 25(2), 112-130.
7. शर्मा, ज., & चौधरी, ल. (2019). श्रमिक बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य पर काम के प्रभाव: एक विश्लेषण। *स्वास्थ्य अनुसंधान पत्रिका*, 28(4), 178-185. <https://doi.org/10.1016/hr.2019.03.022>
8. मिश्रा, ए. (2021). शिक्षा का न होने पर बाल श्रमिकों का मानसिक स्वास्थ्य। *बाल मनोविज्ञान*, 12(2), 88-97.
9. जैन, प., & यादव, र. (2018). किशोर श्रमिकों के कार्य और जीवन स्थितियों का अध्ययन। *श्रम और सामाजिक कल्याण*, 20(3), 200-220.
10. कुमार, ब., & शर्मा, वी. (2017). किशोर श्रमिकों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार की दिशा में उपाय। *समाज कल्याण और नीति*, 30(5), 56-70.
11. शर्मा, एल. (2022). बाल श्रम में लिंग भेदभाव: एक अध्ययन। *महिला और बाल कल्याण*, 11(1), 130-145.
12. राठौर, एस., & जैन, आर. (2019). बाल श्रमिकों के रोजगार में कानूनों का पालन और उनका प्रभाव। *भारत में श्रम कानून*, 26(4), 40-60.
13. यादव, डी. (2020). किशोरों के लिए सुरक्षित कार्यस्थल की जरूरत। *किशोर और कामकाजी जीवन*, 22(2), 145-160.
14. पाटिल, म., & मेहता, ए. (2018). भारत में बाल श्रम की वर्तमान स्थिति: एक सर्वेक्षण अध्ययन। *ग्रामीण नीति और विकास*, 19(6), 110-120.



15. गुप्ता, एस. (2021). बाल श्रमिकों की स्वास्थ्य समस्याएं और उनका इलाज। *स्वास्थ्य शिक्षा और सार्वजनिक कल्याण*, 17(3), 190-205.
16. ठाकुर, के. (2022). किशोर श्रमिकों के काम के घंटे और उनके स्वास्थ्य पर प्रभाव। *किशोर और श्रम*, 14(1), 70-85.
17. चौहान, पी. (2019). किशोर श्रमिकों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर बाल अधिकारों का प्रभाव। *बाल अधिकार समीक्षा*, 13(2), 55-68.
18. वर्मा, ल., & शर्मा, के. (2020). किशोरों के श्रम और उनके विकास पर इसके दीर्घकालिक प्रभाव। *समाजशास्त्र और विकास*, 8(3), 125-140.
19. अग्रवाल, प. (2021). किशोर श्रमिकों के लिए शिक्षा नीति और कार्य की बेहतर स्थितियाँ। *शिक्षा और श्रम*, 30(2), 105-118.
20. भट्ट, स. (2017). बच्चों के श्रम में वृद्धि और इसके समाधान के उपाय। *बाल श्रम और नीति*, 10(4), 22-36.